

ततः स्वतः कुरु दूति इदं यान् ॥ दवत लयं ॥ नमस्तु च कुनक्षति ॥ अथ वा दयतु ॥ अथ वा दयतु ॥
यात्री न्यादि सर्वेषां आशीर्वादं ददतु ॥ यथाका ॥ धारयतु ॥ भर्तुं ददतु ॥ अथ वा दयतु ॥ अथ वा दयतु ॥
विन्दुयं ॥ ५ ॥ यथाका ॥ धारयतु ॥ भर्तुं ददतु ॥ अथ वा दयतु ॥ अथ वा दयतु ॥
न ॥ सिद्धं ॥ मादनीं ददतु ॥ ततः यात्री न्यादि सर्वेषां नमस्तु ॥ ॥ वाक् ॥ अथ वा दयतु ॥
श्रीवास्तवस्य ददतु ॥ अथ वा दयतु ॥ श्रीकृष्णं वन्दितुं ॥ ददतु ॥ अथ वा दयतु ॥
अथ वा दयतु ॥ नमस्तु सर्वेषां ॥ सर्वेषां नमस्तु ॥ अथ वा दयतु ॥
समादि दयतु ॥ सर्वेषां नमस्तु ॥ ॥ अथ वा दयतु ॥ अथ वा दयतु ॥
सिद्धं ॥ अथ वा दयतु ॥ अथ वा दयतु ॥ अथ वा दयतु ॥
सिद्धं ॥ अथ वा दयतु ॥ अथ वा दयतु ॥ अथ वा दयतु ॥

॥ ॥ तता वील हा र्थे ज धादा स्य माने ॥ नित्य वलि दाने ॥ तत्पत्नी ॥ पुत पुता ल्यादि ॥ समया न काल यत् ॥ सु
मय वाक् ॥ वृक्ष ली य धू का वन सुदि गति ॥ ॥ सुपिता म त कू म्हा ॥ द मर्ग इत्वा ॥ सुर्व स्था दा त वी ॥ ॥
तत्पत्नी वाक् ॥ गृहि न्या सा र व द ह ॥ गृव लां य न म व च ॥ म हा व द व ले द द ॥ वा ज ग्री म क कृ ग क ॥ ग रु ना सा ड
या व द्धि ॥ मा य ग्री का नि म व च ॥ म हा पू षि र व लि य ॥ ल स्त्री स न ति व द्धि नी ॥ न सा य ना यी सु र्व स्य ॥ द व त प श्रः
नि र्मि तं ॥ प ना म त व सी दि वी ॥ पी य ता र व ह ष ड् ॥ न न्द नु य र्व वा ल श्रः ॥ न न्द नु धा न नू प का ॥ नि र्वा स व
न्य प र्थ न ॥ अ वा न्य कू ल दी कि र्ता ॥ ॐ ति वी ल हा र्थे ॥ ॐ ति श्री य द्वा मि त्राय ॥ दी प आ ग र्व न ॥ स य द्गु स मा फ
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१ उं नभा श्रीमदा ज्ञानाय ॥ तनाय द्वात्रिंशाय ॥ अध्यायस्य कवचं ॥ तस्मात्प्राग्वन्तु उं उगततहयहर्षसुर्वलाक
कनाथं वाकं कापालवर्गं शक्ति कलधवलं नीलं आकाशवर्णं ॥ विलोकीतुं तानं सुकपिलनयनं दवयैत्युर्वच ४ क
ल्याणनयनयुग्मं आत्मदनमदहनपञ्चमं गन्धमालि ॥ १ ॥ गन्धर्वगणयथैव्यक्तिकलनियुक्तं ४ कित्तरेगीयमाना
ब्रह्मपत्न्यादिदयो लक्ष्मिपूतकिर्तिहे श्रद्धितवानूवन्द्ये ५ दहाद्यादीर्घुकाकासुनचितवनये साधुसिन्धुनवर्णं ४ सु
पीतव्र ४ कया रुद्रिदगगदनूतैर्नूरुवामदवः ॥ २ ॥ वज्रं वज्रं समुत्कृष्टं निषत्रमिवगिरीलम्बदावाग्निमाला नगापि
गमगतायेकुरित्तिनपित्रविहङ्गिडितकानोर्गं ॥ रिशुवयशुवनस्तानसहालकालं ॥ ३ ॥ निः ४ स्वप्ननिश्रियार्गनित्रति
नवगुर्वनिस्तले निमुपश्र ॥ निः ४ नयं निर्विकालं निधनमिवपदं निर्मलं निर्गतं ॥ सुर्वं नानात्मसुखं विलसि
तवदनं चादिमध्वावसौ न ॥ पायात्तामूकिहता ॥ पशुपतिवदनायागिनां हानगम् ॥ ५ ॥ पश्चात्तन्मध्वं वक्तुं
मूढविलम्बं ॥ धानवद्व्यायमूलं ॥ नकावालश्वदवीयतिनधाननिर्वकवचं द्वावद्वं हता ॥ ६ ॥ उक्तावलापुशतिपुत्र

तिगसूवदहालपातालमूले... संशवकुंस्वकुंरिदगहयहनेरुनुघंयक्रिदानं॥ ३ ॥ वदानींशतसह
 मिमिपूवविजयिनावामदवीनिप्राना... ^{वृद्धादिनां सुनानीं जनसकलसदा कानिमलार्कं ०। वकुं पूर्वस्य गंगा}
^{४४ पापनां निरुवनं नुवनं नृनसंलायकारं ॥ ४ ॥}
 रुतिमयिकिलर्षहाटकारसूदीर्घ... ^{पायान्नतापनं नृनककं नीनगभक्तं} स्वप्नीनां पानरुहं मरुयकलव
^{पैवर्गपैववकुं सुदविकटजटो}
 नं४सर्वधानासु रूपीवीजीषद्विकल्लिठमलुकमरुयनकिमालावतांगी... कीठनंनकिमंभंसगदयविद्या
 पातुमां पूर्वधाने॥ ५ ॥ ॐ तिघीपूर्वमायज्जधानकववंसमाफ॥ छर॥ ० ॥ ७ ॥ ॥



१ उँ नमः स्थिति कार्ये ॥ तता उँ नवात स च का द्वात्र ॥ उँ ज
 मध्वगिक वीज थ ॥ शिव ह वायु पगुका पक्षत मरुत वैव
 वायु न्ति गनु धा ठ नी ॥ द्वि व ह वै व नी ग वैव ॥ क कालादि न
 काल की वनु द्वात समा यूक ॥ वाल व क पु की र्णिनी ॥ पवि वा
 ल म ध या गि व ॥ रु रु का अ ध र वै व ॥ द्वा रि न या गि नी व ह
 नु न ह पवि वाल की ॥ उँ नवात समा ख्याता ॥ मध्व वैव सू द ज य
 न् ॥ ॐ नि डु र् नवात स च का द्वा त समा फ ॥ ॐ ह ॥ ० ॥

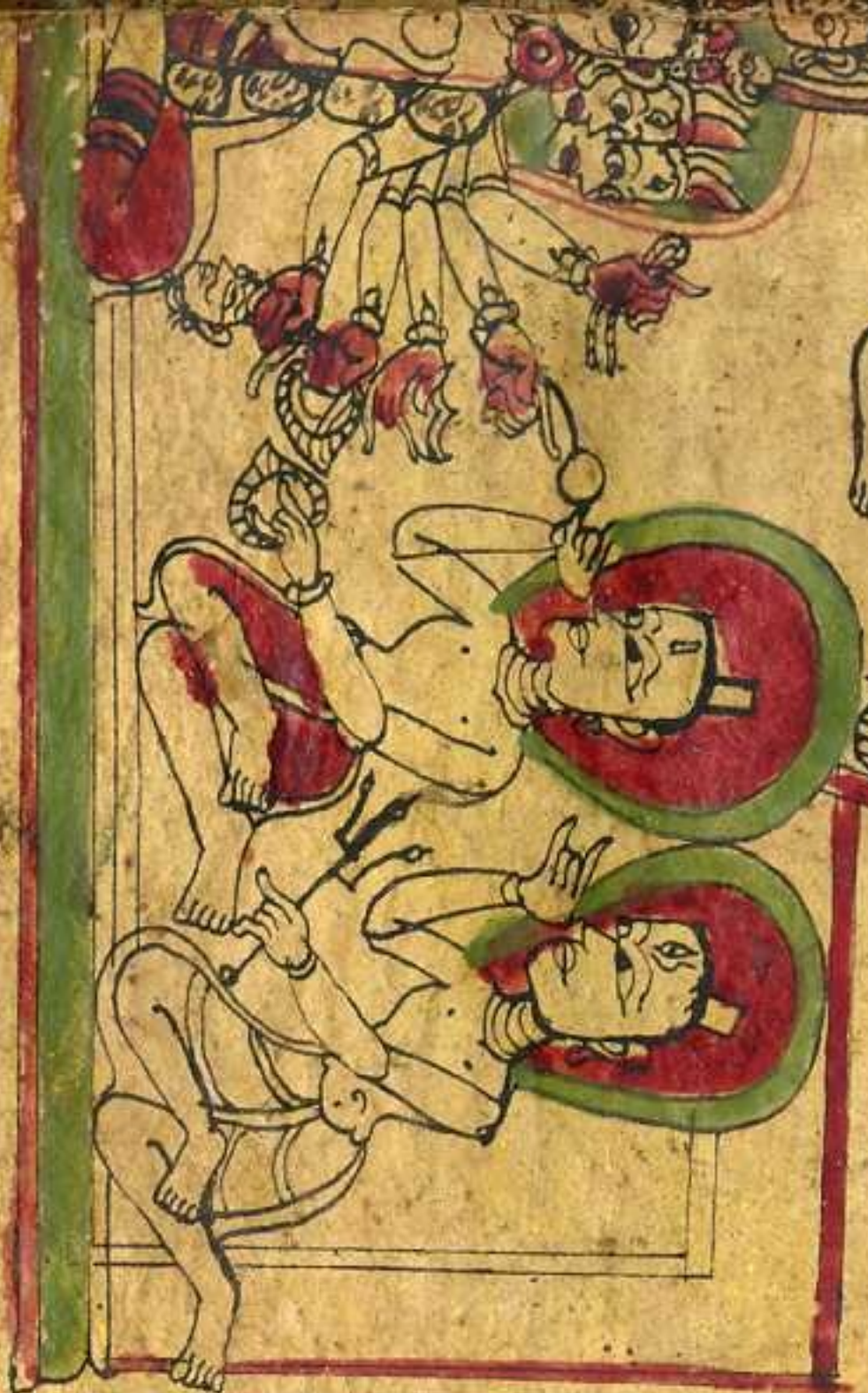
१८ पुष्पा लक्ष्मी







क ३ नमो भगवते वासुदेवाय



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय





पुंरु गि ॥





सिद्ध



व्रधाज पूर्वमाम॥



२८
 रडं नमामहादेव वाय ॥ तगा लव कुन्द सखान ॥ डं पशव कुंद
 गुरु ऊं रिपं नयना दत्त ॥ पर्व ध्वता नू आ रा सं द कि (६)
 नील आतिरी ॥ डरु श्रव कव र्नु कु यन्त्रि मपीत समु वा ॥
 डुर्द्व एटिक र्ग का सी ॥ पशव र्नु म ह स्व र्ग भ कप य वा तां व
 द र्क ॥ स्वता रा सर्व र्ग ॥ धूतं ठ म लै प म श्र ॥ कि मा
 ला रु द कि (६) पा ना कृ ण र य क र्ग र व ॥ वी जि ख द्वा ग वा म ध
 ॥ मू छ मा ला ग ल य का ॥ क पा ल मा ल (६) रि ता ॥ ना ग य श्र प
 वी ता भि ॥ ना ग र व ल रू षि त ॥ रु रु पा दा भि स वी रि ॥ दा ग र
 व ल रू षि त ॥ ना ना व ल वि रु षा भि ॥ सू र वा गी न म ह स्व र्ग ॥ र व
 वी स रु का र्पा र्द्व ॥ स रु सो म द का ग र भि म दा र्ग आ म ह र्ग नि ॥ सर्व
 सि धि र्ग का न धा र्ग ॥ सर्व पा प वि नि मू र्क ॥ नि र वा ना थ नु र व र्ग
 उ र्व क्षा ला म हा र्ग र्ग ॥ सर्व का म रु ल प र्द ॥ ॐ रि क्षा न ॥ ॐ रु ॥



रविवार कृष्ण





[illegible]

१ॐ नमः ४ अलिकाये ॥ तगायर्ववानसकवच ॥ १ॐ अहं सुस्ति ॥ सनिकमलुलसाकसुगु ॥ वनाउमकालिगिकलुल
मावहनि ॥ याकाथनाकुरुकं विमिऊलाहा ॥ वारं कलाउममसा ॥ उहममलाय ॥ १ ॥ वलासुधातइ गुधादिक
गुजुकानि ॥ किं गिहलुगिगिषउठाकलापी ॥ नगुगयं वद्विद्विदि वषहं सिताया ॥ वालव्वीहवउसा ॥ उहममलाय
॥ २ ॥ सिन्धुनयं ऊसदसाइतिमावहनी ॥ विश्रुत्यकागपुतिमा ॥ यहाकिं दधाना ॥ मायूनकासनसमासितावानुप्री
कोमात्रीकाहवउम ॥ उहममलाय ॥ ३ ॥ गवूसमीइतिनिहागवूठासनह ॥ मूर्हितपंकजमुखीनवयावनाद्या
॥ नंखासिचकगठयाकिगवावूहसा ॥ ग्रीवातत्रयसत्रलनोमिसुदायसती ॥ ४ ॥ उहलुकिं उकदलादिकनकका
नि ॥ धावातिशानकठिनानतकालवकुमीनासियागवतयाकिगवावूहसा ॥ कोमात्रीकामदीषजातगगातमामि ॥
॥ ५ ॥ वरुसुडीवरुलनीनमूवनरुकि ॥ नगात्यतदगसतपवि ॥ गहमाना ॥ एवावगासनसिता ॥ धउवडाहसा
वारंनमामि ॥ उवकिंनवयववया ॥ ६ ॥ पुतसिताननकनककपालमाला ॥ स्वर्वांगिठिठिमकपालसकहिरुसा

१५५ कलालवदनाऊगदकधागी कोमावीकागवलोमिसदायसलो॥ १॥ सुदुर्घसानवूविलाकमलायगा
कीपीनसुनीलातगिहातसूगाहमानाखर्गुगिष्टलववदारुयपाविक्रयोवाहनमोमिमरुतीमरुनीयमरुहि॥ २॥
ॐनिधीष्टवामाययावाल्याकववसमाफ॥ ३॥ ० ॥

ॐ नमः श्री महाकालिकाय ॥ अथ दवीनित्य कर्मात्रेण विधिं लिख्यते ॥ गित्तु मन्त्रनाचमनीयं ॥ ॐ पत्रमग्निरग्निकिष्ठी धीनाथ
 अग्नौ प्रपात्रे पर्यं कर्मात्रेण गृह्यादाम्बुजं आवृणु ॥ ॐ मि ॥ ॐ किं विरदं ॐ गृह्यादकल्पानमः ॥ ॥ मकरपूर्व्यं दवासेधा न
 यत ॥ मकरपूर्व्यं मासने धावयत ॥ मकरपूर्व्यं अर्त्तनिखाया धावयत ॥ मकरपूर्व्यं आपानं दध्यादुक्तं न पविष्यत ॥ ॥ चक्रनाक
 रं रुक्मं सपयत ॥ ॐ ह्रीं ॐ कनसोधनं ॥ ॐ कनिष्ठा ॥ ह्रीं मध्वमा ॥ ॐ अंगुष्ठा ॥ ॐ अनामिका ॥ ह्रीं तर्जनी ॥ ॐ कनयूगम ॥ ॥
 ॐ अववाहावो ॥ ह्रीं अवचूला ॥ ॐ अवजुगुलिला ॥ ॐ दक्षकटि ॥ ह्रीं दक्षजानू ॥ ॐ दक्षपाद ॥ ॐ अक्षत ॥ ह्रीं तीक्ष्ण
 ॐ नाहो ॥ ॐ हृदय ॥ ह्रीं काल ॥ ॐ विद्रुमकुलं ॥ ॐ विद्रुमकुलीनाम् ॥ ॥ ॐ ह्रीं ॐ वल्लुहवज्रजानुवधस्तद्वनपूतद्वन आका

[illegible]



१ **डं नमः बालकोमावीकाये** ॥ वक्राद्रिल ॥ मध्वति (ध्रुव) मति (ध्रुव) षट् च
 धं वाक्पथक ॥ धातुनीचसमायुक्तं ॥ बालवक्रयुक्तीर्तिनी ॥ मध्ववबालकोमा
 नी ॥ अध्यायं षट् मकथा ॥ उन्नतकसद्वेव ॥ अकवठतयनीतथा ॥ बालधा
 तनीसमायुक्तं ॥ उन्नतवक्रमालिष्यत् ॥ यद्वामायगतानिह ॥ बालकोमावीकात्त
 मः ॥ **ॐ नमः बालकोमावीकाये** ॥ ० ॥ **डं नमः बालकोमावीकाये** ॥ तत्ताव
 तु द्दशीयुजामालहत् ॥ दवमदतसा ॥ धवक्रसद्वजायाय ॥ ह्यार्चि ॥ अर्था
 दि ॥ वाक्पथक ॥ **डं डं डं** स ॥ श्रीमहामार्हं तु हेनवाय ॥ वतु द्दशीयुजा ॥ दवा
 र्धननिमित्तार्थं ॥ कर्तुं श्री ह्यार्चि यजुर्धनमः ॥ ॥ **उन्नतमत्कालयाय** ॥ ॐ
 उन्नतमत्कालयाय ॥ उन्नतमत्कालयाय ॥ उन्नतमत्कालयाय ॥ उन्नतमत्कालयाय ॥

ॐ नमः बालकोमावीकाये ॥ ॐ नमः बालकोमावीकाये ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ चण्डिकायै नमः ॥ ततः पूर्वमायं दीपकागमर्चनविधिर्वक्तुः ॥ पूर्ववालवक्त्रं ॥ उद्धृति
लिखितं चर्कं नञसाकर्तुं रूपिणिमिमांसादि कृत्वा षट्कं ॥ अष्टादशमदिषादशं ॥ वाक्चदशानवचकं ॥ वनीनिधाय
नर्चयि ॥ ॐ लायादशमवेव ॥ पूर्ववालपुकीर्तिता ॥ ॐ नवक उद्धृति ॥ ० ॥ ॐ नमः ॥ पूर्ववानवदवाये ॥ अधुना नमः
पुवकामि ॥ पूर्वजागमर्चनविधिः ॥ अधुना समिदं एकं ॥ ध्यातां वालरूपिणि ॥ ॥ ॐ कं कीं स ग्रीं स हामा हं ॥ ॐ नववा
यं ॥ पूर्वजागमर्चननिमित्तार्थं ॥ कं उद्गीह्यार्थाय नमः ॥ ध्यातां ह्यार्थं ॥ ॥ अध्यादि ॥ गुननमस्तु ॥ ॐ यत्र मन्त्रिव
रा किं ग्रीं ग्रीनाथं ॥ अग्रेष पारं पर्यं कर्मैव गुनपारं पर्यं यावत् पुनोमि ॥ ॥ ॐ नमः ॥ बालको मारी कारये ॥ आ
चमनादि ॥ षष्ठं अनासु ॥ चक्रावादिन्यास ॥ अलपाग ॥ अर्घपाग ॥ पूजनं ॥ हस्तं ॥ उद्धृति ॥ आत्मयज्ञा ॥ ॥ नं ॥ अग्रे
नमः किं कमलासनाय नमः ॥ ॐ नमः ॥ षष्ठं कासनाय नमः ॥ अष्टमं पुनासनाय नमः ॥ नमः ॥ मयूनासनाय नमः ॥ ॥ नं ॥ कीं ग्रीं

[illegible]

[illegible]

वृषासनसुसंस्मृता विनयरुचिर्नयनं दाविडविप्रातनं ॥ ध्यानपर्यनमः ॥ यजुर्न ॥ अथात्रजुधात्रजु
धात्रामुखीवक्ररूपाये ॥ ऊँ कौं कौं कूँ कूँ ॥ अनाहतकाकिनीये ॥ ललापनीविष्णुनन्ददवपाय ॥ ॐ अमायाय
मुं नत्तस्वर्गलाकहागगर्गमिनी ॥ स्वर्गलाकज्जमगर्गसंवाविनी ॥ स्वर्गनन्ददव ॥ स्वर्गमा ॥ वतीजलरुका
टिसिद्ध ॥ वतीजलरुकाटियागिनीपाइका ॥ ॐ निखागषत्रमध्वरु ॥ कृत्तिकानन्दसंशर्त ॥ कालीमलुनसंश
कौं ॥ कूँलीसनमस्तु ॥ षष्ठ्यमावाय ॥ ऊँ सर्वविज्ञावनीमूडा ॥ मुं रुचलायवलिगर्द ॥ स्वाहा ॥ पञ्चतपहा
नन्ददव ॥ जाय ॥ मुं स्वाहा ॥ १० ॥ सा ॥ रुचर्नरुचर्नसर्व ॥ पविर्गर्दह ॥ गधर्नी ॥ हृष्टिसेवददालक्षी ॥ नूडरु
पनमा ॥ १॥ अरुगध्यादि ॥ ०० ॥ तिह्रुचलायनविधि ॥ ० ॥ तगाजलवत्रपूजा ॥ वायुर्वायुमलिपूत्रमु ॥ जलवर्न
विष्णुदवता ॥ ध्यामवर्गुमहातर्क ॥ नकमर्गुलपूजनी ॥ ॐ अमलिपूत्रवक्रासनायनमः ॥ ॐ अमकलास्त्राय

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ हँ ४ सुर्वी माहिनी मूर्त्ति ॥ हँ ॥ सर्ववन्मूर्त्ति यः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ यः ॥ यः पहा न यः जर्न ॥ जप ॥ हँ ॥ स्वाहा ॥ १० ॥ स्वाहा
॥ सर्ववन्पावर्ण्यः ॥ यः वीर्यदह ॥ माधनी ॥ ॐ ॥ सिद्धिक्रिया सर्व ॥ ॐ ॥ नमस्तु नमा मुता ॥ सर्ववन्मूर्त्ति यः सर्वप
त्रिपुर्णमस्तु ॥ ॐ ॥ तिसर्ववन्पद्माविधि ॥ ॥ तताम्नानन्दवन्पद्मजर्न ॥ आशावा नृणी कः ॥ तः ॥ तिलानन्दकी च
नू ॥ नीलवर्णकषु निह ॥ अनादि वाधपद्मजर्न ॥ ॐ ॥ आशाचक्राय पाद कां पद्मयामि ॥ अपुता सनाय पाद ॥ ॐ ॥ २ ॥
कं कालिकादवी पाद ॥ आन ॥ नीला ॥ अननिरदवी ॥ चतुर्वाहिलचन ॥ खड्गकधनदवी ॥ यः ॥ पाणकनद्वय
॥ अलिमासुनठानिल ॥ विषसंसावतातकी ॥ आशाचक्रकृतादवी ॥ कालिकालविनागती ॥ आनपूर्वी नमः ॥ पद्मजर्न ॥ ॐ ॥
किलि २ विर्वका कः ॥ यः ॥ ४ ॥ यः ॥ तत्वा ॥ ॥ हँ ॥ हँ ॥ हँ ॥ हँ ॥ आशाहाकिनीये ॥ ४ ॥ धीपूनी मूर्त्ति सानन्ददवपाद ॥ ३ ॥
कालि २ म हा कालि ॥ मां स ॥ सानि गता ॥ जनि ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ न कः कषु मूर्त्ति दवी ॥ मां मां पद्म ॥ सर्वदा ॥ अनादि वाध ॥

काश... माहानिगमिनापहं। कुकिमूकिप्रदाताली... कललीसनमासुग ॥ षष्ठमावाय ॥ क्वीसर्वद्विगमूडा ॥ रेंअक्वी
कालिकायेवलिष्टद्वैत्ताहा ॥ चन्द्रनायपचार ॥ जाप ॥ जूंखाहा ॥ १० ॥ साहा ॥ नमस्तु कालिकादेवी... छुनिबिबे
दायली... बाधि... कहरयैधार्... कालमस्तुहयापहा ॥ जयेपूरुशसाहा ॥ लक्ष्मीसम्यर्हिदायकी... कालीमस्तुहनी
लीनी... ज्ञानन्दचक्रसामर्ग ॥ काल्याचनविध... तसर्वयत्रिष्टुमस्तु ॥ ॐ गिष्टुर्वकाली... जमावालीयुजाविधि ॥ ॥
॥ ७ ॥ ततश्चिचक्रजन ॥ पाण्डकजुलुचन... कूर्कगलुपुनस्यत... स्वतवर्धुमहागर्ज... तस्मादलुनयुजन ॥ जलुज
युजन ॥ रेंअनीलजनकमलासनायपाय ॥ जलुजासनायपाइका ॥ ७ ॥ ॐ कर्गकिथ... जलुजायपाय ॥ ॥
न ॥ चन्द्रकाठिमहागजा... तिनगुचवतुर्जुज... फर्गुपाण्डुतादवी... वलदाकमलाहया ॥ वक्रालीकालुदवाय... सीहा
गसिद्धिकामदा... लीकामसान्विकीदवी... वक्रगकिनमासुग ॥ ॥ नयर्ष्यनमः ॥ युजन ॥ रेंअसांसीहं... ससखाका
मसान्विकीदवी... ग्रीपाय ॥ ७ ॥ जूपाय... हस... जालन... बाधिपतय... किय... गकि... पनाये... लिबिलवलि... कादे... वीधीपाय

[illegible]

[illegible]

आप ॥ नूँ स्वाहा ॥ १० ॥ सा ॥ स्वतज नाम सी दवी ॥ सर्व काम रुतु पुद ॥ आप मूक षू सर्व षू ॥ सर्व शानिक ली पनी ॥ काश्च
युजन विधि ॥ सर्व पनिक लु ममु ॥ ० ॥ तिका थ युजन विधि ॥ ० ॥ अथ महापाण्डुका ॥ एतानि च नू यजानि ॥ यश्चात् पा
ण्डुका युजनी ॥ अधात्र समिदं एकं ॥ ग्रयणी वालु कृपिनी ॥ ॥ आ धात्रा अष्ट पृथिका सने ॥ तैज पश्च यता सने पाय ॥ ज
महापाण्डु सन पाय ॥ आन ॥ त्रातात्र सनिहा दवी ॥ सिन्धु त्रात्र ल सा हित ॥ अष्टादश गुडा की लु ॥ एकाले काले सा हित ॥ ॥
की त्राद मथ नाई ॥ अलिद वन मा मु ॥ आन पृथिन म ॥ यजन ॥ तैज याँ यी यँ यँ ॥ ललाट यरुली थ ॥ यरुली पनी
कोलिसान न्य दव पाइ कां ॥ ३ ॥ अँ औं ॥ लुनील अनन लो क हा ग ग र्क ग मिनी ॥ अन ॥ नला कामा संचालिनी ॥ अन
कान न्य दव ॥ अन कामा ॥ अन नत्र र्क कोटि सिद्धि ॥ अन नत्र र्क काटि या मिनी पाय ॥ तैज वाँ वी वँ ॥ वी वानुली दवी पा
य ॥ द्या द्या ॥ मूल पठ ॥ अधात्र वरु वतिनी गुय ॥ ॥ तैज माँ मँ मँ मँ मँ मँ ॥ सर्व सा ल पाय ॥ गुये पाय ॥ तैज

[illegible]

॥ १० ॥ काण्ड ॥ समयान्तमहादेवी ॥ आपमूक करं परं ॥ नानि पृथि सदा तस्य ॥ लक्ष्मीसमर्पिदायका ॥ समयान्ता
र्चनविधिः ॥ सर्वपत्रिपुष्पमम्बु ॥ नित्यं समयान्तार्चनविधिः ॥ ० ॥ तन्नामकं नृपुत्रं ॥ अक्षयवतीं कृष्णादि ॥ असिदासना
पाइकां ॥ १ ॥ अना ॥ यमसिंहासनादृष्टा ॥ जवागतिमवागिनी ॥ लालानसनिहायवी ॥ यमनागसमपुत्रा ॥ एकवक्त्राणि
नगधरा ॥ दिवाहवनलहृषिता ॥ वज्रकुजामहादेवी ॥ चतुर्भुजाक्षविनी ॥ खड्गहस्तकदलीव ॥ पुरुषाणामविन्दुका
॥ नानावत्सलसूत्राङ्गी ॥ सोमयूपावतालिनी ॥ एवं आत्मानमहादेवी ॥ वानरीकृष्णकेश्वरी ॥ अनापूर्यन्निमः ॥ पूजनं
॥ अक्षयवती ॥ त्रिपाङ्गुलि ॥ १ ॥ नमो ॥ श्रीमहाविद्यानाथेश्वरी ॥ कलकल्याणपाद ॥ ३ ॥ षष्ठ्यमावा
य ॥ कृष्णायानीमडा ॥ अवन्त ॥ यवलिंगद्वयस्य ॥ आप ॥ मूर्तिस्वाहा ॥ १० ॥ काण्ड ॥ लालासिन्धु
लवङ्ग ॥ अवकसूत्रमनिहा ॥ अग्निसिन्धु ॥ वङ्ग ॥ साक्षादगच्छन्निज ॥ सिन्धु ॥ रुद्रविध्वनीविन्दुकायालदस्ता

१ सिंह कृ सोम मूर्ग सुकल उयपदा सुवसिद्धी र्थ काली ॥ ऐ ला र्थ यज्ञ नीयं सुकल हय रु र्थ दव दं वान भाम्भु
॥ अरु ग न्धादि ॥ ॐ ति कु म्भ यज्ञ न विधि ॥ ० ॥ तता वलि पुदानं ॥ ऐं अ व लु च ध म हाना सा ॥ सु म्भु र्खी इ म्भु र्खी
वला ॥ नवती सुध मा धा ना ॥ सो मा ही मा म हा वला ॥ ज्या न्य वि ज्या न्ये व ॥ अ जि ता वा य ना जि ता म हा क टा वि नू पा
नी ॥ ॐ क्वा का न मा ह का ॥ जा त ही ना सं हा नी व ॥ द द्वा नी ॐ क्वा नवती पि प्य लि प्य र्थ हा नी व ॥ अ स नी ग स्य हा वि नी ॥
ह ह काली सु ह डा व ॥ ह डा ही मा सु ह डी का ॥ द्वा रि ण म नु मा कृ टा ॥ क र्त्तिका पाल क वि नी ॥ द्वा रि ण म हा या ग्नि ॐ क्वा
मू ॐ सु वा स नी ॥ द्वा रि ण या ग्नि स्था व लि ग र्द्र २ स्वा हा ॥ ॥ तता अ सि ता म्हा दि व लि ॥ अ सि ता म्भु र्खी व ॐ ॥ का ध उ त्त
न र्थ न वं ॥ क पा ल शी ष ण्ये व ॥ सं हा ना य न मा इ मु र्ग ॥ ॥ अ सि ता म्हा दि ॥ अ कृ ते न वा य ॥ व लि ग र्द्र २ स्वा हा ॥ ० ॥
तता व अ धा दि व लि ॥ वा म्भु मा ह न्य वी ॥ ॐ ॥ को मा नी वे षु वी सु था ॥ वा ना ही वे व मा ह न्डी ॥ चा मू अ ल म्भु र्खी कृ पि
णी ॥ ॥ व अ धा य म्हा क र्त्तिका व लि ग र्द्र २ स्वा हा ॥ ० ॥ तता रु ड का दि व लि ॥ ऐं अ रु ड कं य र्थ पी ० थ ॥ अ न्य या

लिपूनाककं। दक्षिणशुभिवताली, शुभिदिक्षाधनेमल ॥ कामाकावावलीपी०५॥ वायुवाकलालीनम॥ उरु
लं उकपादधर ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ उरुवक्षसमुखंवेव ॥ शुभसुननसंरुकी ॥ स्वचन्द्रशुभानंरुय ॥ हेनवाः
कीनमामयदी ॥ रुकुकादि ॥ दशहेनवाय ॥ मशानाधिकय ॥ ॐ मावलिगृद्ध २ स्वाहा ॥ ॥ ॐ गिवलिपुदानविधि ॥
॥ ० ॥ तगादीपयुक्ताल ॥ मनुयथा ॥ जे अष्टा दीपयुक्ताल ॥ ॥ द्वादशाक्ष ॥ मूलषष्ठ ॥ स्वस्तिवाक् ॥
जे अष्टास्वस्तिवाक् ॥ स्वस्तिदवाधिद ॥ वता ॥ यागिनीस्वस्ति सर्वार्थ ॥ स्वस्तिपीठगुरुकाशा ॥ स्वस्तिवाक्
सुदामाया ॥ स्वस्तिविधिनिविन्ना ॥ यथिवादिस्त ॥ दास्वस्ति ॥ स्वस्तिना शुभगुरुय ॥ यागिनीस्वस्तिपीठगुरुकाशा ॥
दिसिदवता ॥ स्वस्तिदवाधिदयग ॥ मनुमूर्तिवा ॥ सुखी ॥ नारिकूलसंरुत ॥ नकिदीपमनारुनी ॥ पुकाशपन
मंरुत ॥ नविद्यामसंरुत ॥ रुयवत्यालिहकाव ॥ स्वस्तिकूलान्निदवता ॥ वन्दितादवतासर्व ॥ अतिनूपनमा ॥ शुभ
॥ जामयतिनयदीय ॥ दलनैपापनाशन ॥ दहनि सर्वपापानि ॥ सुफज्जलकगायद ॥ ज्ञानाशोकमिददीय ॥ यवी

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कृत्वा यथावलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ पञ्चमपदानयूजनं ॥ जाप ॥ ॐ स्वाहा ॥ १० ॥ काण्ड ॥ अष्टाविंशोऽध्यायः ॥
पंक्तिमपि शुक्लं सर्वतावामयत्वं सर्वसिद्धिदं तां जसूनसूनननं साधकासिद्धिकामैः सर्वकर्मा
नूयुः कालिसुकलुठमयै आदिमक्षाप्रसूतैः सैसानसानदृतातिमिनहनहननतडनूपनमामि ॥ दीपाव
नविषेत्सर्वपनिष्कृतुमम्बु ॥ ॐ ति दीपयूजनविधिः ॥ ॥ तगादीपजुमनं ॥ नमस्कात् ॥ पुथमं कालिदत्वा ॥
तगादीपसमर्पणं ॥ जानूषीधनवीत्यादि ॥ ॥ प्रासनमनं प १० त ॥ ॐ अ जूनककुजावहिकुजा सर्वरासानिना
मयैः साकुरुं कायगुहनी मयसुषपनं लज्जत ॥ जूनादिवाधनं काण्ड ॥ मसूनतिमिनापदं लुकिमूकिपुदादीपं रक्त
यामिसुधादितां ॥ ॐ अ जूमनं २ जूमनार्कवाय ॥ वालकीमात्री स्वाहा ॥ ॥ यजमानस्य जूमककार्यं जूधनाजी
दीपजागर्जनं निमित्तार्थं ॥ कालदीपं प्रासयामि तेन वा २ दं स्वाहा ॥ ॥ दीपककलरुल ॥ माहृदापिहृदा ज्ये
व ॥ ॐ त्यादि ॥ आशुर्क ॥ पारुसना ॥ स्वात्ममूलगिकलह ॥ काठिसूर्यसमपुर्णं कलुत्याकविगद्यकी ॥ दूनडयीस

अनुकं ॥ ॐ निका लदीप रत्नं ॥ ॥ तत १ खच नंद वादि सर्व दयात् ॥ महा समय से रत्नं ॥ दिव्य मलाय का रत्नं ॥
नव कव्य समायुक्तं ॥ वाल्युक्तं नमो १ ॥ ॥ खच नंद या स्या मि रत्न वीरु स्वाहा ॥ ॥ पाण सवा ॥ स्वात्म मूल गि रत्नं ॥
॥ ना हि ये न न्यया ॥ ॥ ह विष्णु मनसा ग्रन्थ ॥ छम्मा वत्सना निष्ठा ॥ मरु वरु हि श हा म्यदं ॥ ॥ अथ खच नमादाय
॥ निर्माल्य निर्मली दहं ॥ पवीरु दहं ॥ धनै ॥ पुसा दि क ग हा कथं ॥ वाल्युक्तं नमो १ ॥ ॥ खच नंद श द्या मि रत्न वद
स्वाहा ॥ पाण सवा ॥ ॥ ॐ दना पाण से रत्नं ॥ मरु ना प न मा मर्त ॥ प वा रु ना म र्य व क्षो ॥ इ हा मि ति व न्य प कं ॥
अथ अल व न मादाय ॥ ॐ म त्स्या मा स म हा मा स ॥ रु क्थी अन कं च न ॥ षट् पु का ल च नं दि वी ॥ वाल्युक्तं नमो १ ॥
॥ ॥ अल च नं या स्या मि रत्न वीरु स्वाहा ॥ ॥ पाण सवा ॥ पु का ॥ म त्स्या मा स ॥ व ली वा म नी ग्र वा ॥ ध म्मा धि र्म क ला
स्व रु ॥ प र्दु म ॥ ॐ इ हा म्यदं ॥ ॥ अथ ॥ ग ष नं ॥ आ रु वि रु न दं दी र्प ॥ उ म्म स म व च्च न न ॥ आ सि ति प दं ली नं ॥ वाल्युक्तं
नमो १ ॥ ॥ ग ष नं श हा या मि रत्न वीरु स्वाहा ॥ ॥ पाण सवा ॥ ध म्मा धि र्म इ वि दि य ॥ आत्मा ॥ ॐ म

नसा श्रुत्वा ह्यनपदीपितं नित्यं सकृद्वर्हि श्रुत्वा मयि ॥ ० ॥ अथ सर्वचरं ॥ खचलादिसर्वचरमायाय ॥ दधिवि
नामलिं वीतुदुय ॥ सुकनादि सर्वदयाग ॥ वावादनं ॥ वामरुक् ॥ नामिका सुषयागन ॥ गिकल ॥ षट्क
॥ वल्लिष्ट ॥ गंग ॥ चरु क ॥ चरु दालेति खग ॥ कर्तुपताका ॥ ल क माला ॥ पूर्व दीप ॥ तापु जनी ॥ अधो व
वक्तु ॥ वती सिधिया ॥ कृत गायत्री धात्र ॥ ॥ नै ज सर्वलक्ष्मी चरं दिवी ॥ सर्व सिद्धि पुदं ग ॥ सर्व भक्ति पद्म या
नि ॥ कु कुली सुनमा सुत ॥ षट्क मा वाक् ॥ ॥ नमूडा ॥ ॥ उमन वाक् ॥ प ॥ ० ॥ नै ज सर्वचरं नमस्कात्र ॥ सर्व
दवसमा गिगं दगनि पावर्ग दूध ॥ ध गने पाप नाशन ॥ हा ग भा र सुखं दहि ॥ द हित लक्ष्मी सुधिया ॥ विघ्नान्
भक्तिकं नित्यं ॥ सर्व भय विभा चनं ॥ या गिरु क्क ॥ कृतया ॥ आवा रु नादि ॥ गिष्टल ॥ यानी मू ॥ दाद गयित ॥ या
गित्यादि सर्व ॥ ८ ॥ सर्वचरं दानय ॥ ॥ पास नमर्तु प ॥ ० ॥ नै ज अनन विविना मय ॥ ८ ॥ पुचल य ॥ ८ ॥ समाहित ॥
सर्वपाप विनिमूक ॥ आशुतीवानू जायत ॥ त्रिं ज विद्य ॥ २ ॥ गिष्टल सिद्ध ॥ नल दीप वि निष्कारक ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥